RAJYA SABHA

Tuesday, the 12th *December,* 2006/21 *Agrahayana* 1928 *(Saka)*

The House met at eleven of the clock.

MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

भारतीय संस्कृति पर अग्रेंजी माध्यम से शिक्षा दिये जाने का प्रभाव

†*281. **श्री श्रीगोपाल व्यास** : † †
श्री रूद्रनारायण पाणि :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को यह जानकारी है कि विद्यालयों में अग्रेंजी माध्यम द्वारा दी जा रही शिक्षा जनजातीय लोगों की जीवन शैली, भाषा, रीति-रिवाजों और परंपराओं को नष्ट कर रही है,
(ख) यदि हां, तो इसे रोकने के लिये क्या प्रयास किए जा रहे हैं, और
(ग) यदि हां, तो इसके क्या कारण है?

संस्कृति मंत्री (श्रीमती अम्बिका सोनी) : (क) से (ग) विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) से (ग) संस्कृति मंत्रालय ने जनजातियों की जीवन-शैली, प्रथाओं तथा परम्पराओं पर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन करने संबंधी कोई अध्ययन नहीं किया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एंव प्रशिक्षण परिषद (एन. सी. ई. आर.टी), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई) या जनजातीय मंत्रालय ने भी ऐसा कोई अध्ययन नहीं किया है। यह सिद्ध करने

---

† मूल सूचना हिन्दी में प्राप्त हुई।

† † सभा में यह प्रश्न श्री श्रीगोपाल व्यास द्वारा गया।

के लिए कोई शोध साक्ष्य नहीं है कि अंग्रेजी माध्यम के स्कूल जनजातीय लोगों की जीवन-शैली और परम्पराओं को विकृत कर रहे हैं।

Impact of instructions in English medium on Indian culture

†*281. SHRI SHREEGOPAL VYAS:††
SHRI RUDRA NARAYAN PANY:

Will the Minister of CULTURE be pleased to state:

(a) whether Government are aware that the education being imparted in English medium in schools is spoiling the life style, language, customs and traditions of tribals;

(b) if so, the efforts being made to check the same; and

(c) if not, the reasons therefore?

THE MINISTER OF CULTURE (SHRIMATI AMBIKA SONI): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (c) Ministry of Culture has not undertaken any study to assess the impact of English medium education on the life style, customs and traditions of tribals. No such study has been undertaken by National Council of Educational Research and Training (NCERT), Central Board of Secondary Education (CBSE) or Ministry of Tribal Affairs. There is no research evidence to prove that English medium schools are spoiling the life style and traditions of tribals.

श्री श्रीगोपाल व्यास : मान्यवर, मुझे प्रथम बार आप के सरंक्षण में प्रश्न पूछने का अवसर मिला है, परंतु मैं इस उत्तर से बहुत दुखी हूं।

श्री सभापति : आप क्वैश्चन दोगे तो और ज्यादा दुखी होगे।

श्री श्रीगोपाल व्यास : मान्यवर, उत्तर है – संस्कृति मंत्रालय ने जनजातियों की जीवन –शैली प्रथाओं तथा परंपराओं पर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन करने संबंधी कोई अध्ययन नहीं किया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसांधान एंव प्रशिक्षण परिषद ने भी कोई अध्ययन नहीं किया है, सी0 बी0 एस0 ई0 ने भी नहीं किया है।

---

†Original notice of the question was received in Hindi.

††The question was actually asked on the floor of the House by Shri Shreegopal Vyas.

मान्यवर, मैं इस स्थिति पर आप के माध्यम से अपना दुख प्रकट कर रहा हूं। जहां स्कूलों के वातावरण से हमारे जिंदा माता-पिता को "डैड" व "मम्मी" कहा जा रहा है, जहां जन्म-दिवस पर प्रकाश जलाने के बजाए बुझाया जा रहा है, माता-पिता को प्रणाम करने के बजाए केक काटी जा रही है ।

श्री सभापति : क्वैश्चन कर लो ।

श्री श्रीगोपाल व्यास : महोदय, इन सब बातों को एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों से भी बल मिलता है । महोदय, मुझे यह कहने में बहुत दुख है, कि जनजातियों के ऊपर अंग्रेजी शिक्षा का जो प्रभाव पड़ रहा है, उस का अध्ययन करने में यहां कोई रूचि नहीं रखता है।

श्री सभापति : क्वैश्चन कर लो ।

श्री श्रीगोपाल व्यास : मान्यवर, मैंने पुस्तकें रखी है और हिन्दी बंधुओं को देखना हो तो वे देख सकते हैं ।

श्री सभापति : आप क्वैश्चन करो ।

श्री श्रीगोपाल व्यास : महोदय, जब अध्ययन नहीं किया गया है और ये सारी दुर्घटनाएं हो रही है तो मेरा पहला पूरक प्रश्न यह है कि क्या संस्कृति मंत्रालय अंग्रेजी स्कूलों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुशांसित व अन्य पुस्तकों की सामग्री का भारतीय संस्कृति व परंपरा से हटकर पड रहे प्रभाव की जांच करेगा ?

श्रीमती अम्बिका सोनी : महोदय, सब से पहले तो मैं यह कहना चाहूंगी कि यह प्रश्न ह्यूमन रिसोर्स डवलपमेंट मिनिस्ट्री की तरफ डायरेक्ट किया गया होता तो बेहतर होता, लेकिन एच.आर.डी. मिनिस्ट्री और ट्राइबल अफेयर्स मिनिस्ट्री से संपर्क स्थापित कर जो जानकारी उन की तरफ से मुझे मिली है, उस आधार पर मैं जवाब देने की कोशिश करूंगी । महोदय, एजुकेशन एक concurrent subject होने के कारण हर स्टेट में अलग-अलग मापदंड और अलग-अलग curriculum स्थापित किए जाते हैं। जहां तक टैक्स्ट बुक्स की बात है, वर्ष 2005 में एन.सी.एफ. ने एक रिपोर्ट दी जिस में यह प्रयास किया गया है कि तमाम उन टैक्स्ट बुक्स को भी अपनाया जाए तो भारतीय संविधान में हमारे मूल enshrined के बारे में हमारी लाइफ स्टाइल, हमारी भाषाएं और हमारे कस्टम्स को रिफ्लैक्ट करती है । ऐसी किताबों को Curriculum में लाया जाए ।इस के अलावा सी.ए.बी.ई. जिसे एच.आर.डी. ने खास इस कारण स्थापित किया है कि उनके स्कूल्स में सिर्फ इंग्लिश या हिन्दी मीडियम रखा जाता है , लेकिन हमारे मंत्रालय का मानना है कि medium of education, cultural traditions और customs पर impact नहीं पड़ता । जो एडीशनल सब्जैक्ट्स curriculum में अपनाए जाते हैं, उन से बच्चों को जानकारी दी जा सकती है । उन में उन के अपने कस्टम्स और रीति-रिवाज के बारे में अध्ययन करवाया जा सकता है व अपने साथियों

के रीति-रिवाज के बारे में अध्ययन करवाया जा सकता है । इसलिए कई मामले हम लोगों ने सजैस्ट किए है जिनसे स्कूल चिल्ड्रस में cultural awareness ज्यादा आ सके, उस में उन के extra curriculum में आर्ट, म्यूजिक लिटरेचर रखा जाए। उनको कोशिश की जाए कि महीने में एक या दो मर्तबा ऐसी जगहों पर लिया जाए, हमारी संस्कृति से जुडे टेंजिबल और इनजेंजिबल हैरिटेज के प्रतीक हैं । इसे सिर्फ एक्स्ट्रा कैरीकुलम में जोडा जा सकता है और हर स्टेट को अधिकार है कि वह अपना कैरीकुलम तैयार करे।

श्री श्रीगोपाल व्यास : सभापति महोदय, मेरा दूसरा पूरक प्रश्न मैं आपके माध्यम से यह जानना चाह रहा हूं कि क्या आपका मंत्रालय यानी संस्कृति मंत्रालय रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, तुलसी, रसखान, बंकिम बाबू, रवीन्द्रनाथ, सुब्रह्मण्यम भारती की रचनाओं के अंश, विवेकानंद , सुभाष, भगत सिंह, महात्मा गांधी, अंबेडकर के जीवन और उनके वचनों को पढ़ाए जाने की अनुशंसा संबंधित मंत्रालयों से करेगा?

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, मुझे बहुत हैरानगी है । आप सब लोग जानते हैं कि हमारी तमाम टैक्स्ट-बुक्स में यह विषय बहुत महत्वपूर्ण रहता है कि हमारे जो स्वतंत्रता सैनानी रहे हों या विवेकानंद जी जैसे महानुभाव रहे हों, उनकी जीवनी, उनके कथन, उनकी सिखाई हुई बातें हर बच्चे को शिक्षा के माध्यम से किसी न किसी तरीके से, किसी न किसी रूप में दिखाई जाएं और मैं आपको यही आश्वासन देना चाहती हूं कि हमारे मंत्रालय के द्वारा हम पूरा प्रयास करते हैं कि जो हमारी भारत की संस्कृति है, जिसमें इतनी डायवर्सिटी है, इतने तौर-तरीके और कल्चरल डायवर्सिटी है, उन सबको एक साथ जोड़ कर यह कोशिश कर रहे हैं कि हर भारतीय नागरिक अपनी संस्कृति पर फ्रख महसूस करे और आने वाली पीढ़िया भी उसी तरह उन कदमों पर चल सके । यही हमारा प्रयास रहता है ।

श्री सभापति : श्री उदय प्रताप सिंह ।

श्री रूद्रनारायण पाणि : सर, मेरा नाम है क्वैश्चन में ।

श्री सभापति : पूछिए।

श्री रूद्रनारायण पाणि : धन्यवाद, सभापति महोदय । महोदय अंग्रेजी के यहां से जाने के 60 साल हो गए । ...(**व्यवधान**)... महोदय, मेरा नाम है ।

श्री सभापति : हां, हां, बोलिए ।

श्री रूद्रनारायण पाणि : महोदय, व्यावहारिक स्थिति यह है, वस्तुस्थिति यह है कि अंग्रेजों को गए 60 साल हो गए, अब हमारा प्रश्न कौन से मंत्रालय को जाएगा, यह तो आ गया है, लेकिन हमें जो पांच दिन पहले अंग्रेजी की प्रति दी जाती है, उसमें जो लिखा गया है, वह है – 'Impact of English on medium culture' इसका कोई अर्थ नहीं निकलता है । यह पांच दिन पहले दिए

जाने वाले पत्र में है । आवश्यक यह जो अग्रेंजी की प्रति अब आंवटित की गई है, इसमें लिखा गया है कि 'Impact of instructions in English medium on Indian culture' इसका अर्थ निकलता है । महोदय, हमने जो आवेदन किया था प्रश्न के लिए, उसमें हमने जनजातीय वर्ग, जनजाति के विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव आता है, इस प्रकार का हमने प्रश्न किया था, लेकिन पांच दिन पहले हमको जों अंग्रेजी का पत्र दिया गया, उसमें लिखा गया ...(**व्यवधान**)... मैं सवाल करता हूं, उसमें लिखा गया हैं – ' of various communities'

श्री सभापति : यह करेक्ट कर दिया गया हैं

श्री रूद्रनारायण पाणि : महोदय, वह मैं मानता हूं । यही अंग्रेजी का प्रभाव है।

श्री सभापति : आप तो क्वेश्चन पूछ लो ।

श्री रूद्रनारायण पाणि : महोदय, हम इस देश को, इस राष्ट्र को किस तरफ ले जाएंगे? मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदया से यह सवाल करता हूं कि जब अंग्रेजी पत्रकार लिखने के लिए तैयार हैं कि 'the Mantriji of Delhi Sarkar was almost gheraoed by the Janta on the Veranda of the Dak Bangla nearthe jungle', जब अंग्रेजी पत्रकार लिखने को तैयार हो गए हैं । ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आपका क्वैश्चन हो गया । बैठ जाइए। बैठिए, बैठिए ।

श्री रूद्रनारायण पाणि : जब अंग्रेजी पत्रकार यह लिखने को तैयार हैं, तो क्या हम इस प्रकार की संस्कृति को अपनी संस्कृति में ले लेंगे कि ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, सुन लीजिए । आपको क्वैश्चन करना हो, तो करिए, वरना रिकॉर्ड में नही जाएगा । ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि : महोदय, आज अंग्रेजी का इस प्रकार से कुप्रभाव आ गया है, कि जनजाति क्षेत्र ही क्या, महानगर दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कहिए या महानगरों के ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आपका क्वेश्चन क्या है? ...(**व्यवधान**)... क्वेश्चन हो तो बताइए ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि : महोदय, स्पष्ट हैं कि यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न है, इसमें प्रश्न यह है ...(**व्यवधान**)... महोदय, मैं प्रश्न पर ही आ रहा हूं ...(**व्यवधान**)... इतने सारे लोग एक साथ आक्रमण करेंगे तो ...(**व्यवधान**)... महोदय, मेरा सीधा सवाल यह है कि जब अंग्रेजी पत्रकार इस प्रकार राष्ट्रीय स्वाभिमान सम्पन्न होने जा रहे हैं, तब हम यह मम्मी-डैडी का कल्चर और इस प्रकर का संस्कार ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : ठीक है , ठीक है, मंत्री महोदया अब आप जवाब दीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि : हम यह कैसे पुकारते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आप बैठ जाइए, यह कुछ भी रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)... कोई रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि : *

श्री सभापति : बैठिए, बैठिए यह कुछ रिकॉर्ड नहीं हो रहा है ...(**व्यवधान**)... कोई रिकॉर्ड पर नहीं जा रहा है ...(**व्यवधान**)... माननीय सदस्य, आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए, यह रिकॉर्ड नहीं हो रहा है...(**व्यवधान**)...

श्री मती अम्बिका सोनी : सर, मैं इतना ही कहना चाहती हूं कि सरकार का जो थ्री-लैंग्वेज फॉर्मूला है, इस थ्री-लैंग्वेज फॉर्मूला के तहत बच्चे की मातृ-भाषा सबसे पहली मानी जाती है, उसके बाद क्षेत्रीय भाषा का नम्बर आता है, लेकिन यह कहना कि ट्राइबल्स पर अंग्रेजी भाषा का बुरा प्रभाव पड़ रहा है, यह इस बात पर निर्भर है कि आप किस इलाके के बारे में बात कर रहे हैं। हमारे जो नॉर्थ-ईस्टर्न प्रान्त है, वहां पर लोग अंग्रेजी माध्यम को पहली प्राथमिकता देते हैं और यह अच्छी तरह से साबित हो चुका है कि मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन के कारण हमारे बच्चे अपनी संस्कृति एंव मूल्यों को नहीं भुलाते हैं। घर के वातावरण, माता-पिता के द्वारा दी गई शिक्षा और पूरे समाज मे जो एक वातावरण फैलता है, उस पर भी यह बहुत कुछ निर्भर होता है।

श्री उदय प्रताप सिंह : माननीय सभापति जी, यह बहुत अच्छा प्रश्न था, हमें उसे हल्केपन से नहीं लेना चाहिए। गांधी जी ने एक वाक्य कहा था कि अगर हिन्दुस्तान से अंग्रेज चले जांए तब भी यह देश आजाद नहीं होगा, यह देश तब आजाद होगा जब यहां से अंग्रेजियत और अंग्रेजी चली जाएंगी यह वाक्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का है।

मैं यह जानना चाहता हूं कि आज यह जो बड़े-बड़े स्कूल हैं, जिनमें अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, उनमें इतना अधिक खर्च आता है, इस संबंध में मेरा प्रश्न यह है कि वह क्या चीज है, जिसकी वजह से उनकी फीस लाखों रूपये में दी जाती है। हालांकि उनका सिलेबस वही है जो हमारे छोटे विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। जो खास चीज है, जिसके लिए इतना पैसा दिया जाता है, वह है अंग्रेजी और अंग्रेजियत। आपके संविधान में लिखा है, कि जब तक ...(**व्यवधान**)... मैं जानता हूं , आप बिल्कुल सही कह रही है कि यह एचआरडी का सवाल है, लेकिन कल्चर पर भी इसका बुरा असर पड़ रहा है।

माननीय मंत्री महोदया, अगर आप कभी राजधानी में हिन्दी का अखबार मांग लें तो आस-पास वाले लोग ऐसा समझते हैं कि यह कोई कुपात्र आ गया है, यह तो राजधानी का पात्र नहीं मालूम होता है। जो अंग्रेजी पढ़ा-लिखा है, वह शिक्षित माना जाता और जो हिन्दी पढ़ा-लिखा है, वह साक्षर

*Not recorded.

माना जाता है । यह सवाल कल्चर से संबंधित है । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार कोई ऐसा स्टैप उठाएगी कि इस मीडियम में ...(**व्यवधान**)...मैं आपको एक बात बता दूं, चूंकि मैं अध्यापक रहा हूं और अंग्रेजी का लैक्चर रहा हूं, इसलिए मुझे पता है कि अगर आप किसी भी सब्जैक्ट को मातृभाषा में पढ़ांए तो कम एनर्जी और कम समय लगताहै , लेकिन अगर अंग्रेजी में किसी बच्चे को पढ़ाएं तो ज्यादा समय लगता है, जब तक उसकी मातृभाषा ही अंग्रेजी न हो, माता-पिता अंग्रेजी में ही न बोलते हो । सभी विद्यालयों में यह कल्चर का सवाल है। क्या सरकार कोई ऐसा स्टैप उठाने जा रही है । यह कोई ऐसी योजना बनाने जा रही हैं? जिसमें अंग्रेजियत कम हो और बच्चों को मातृभाषा के माध्यम से उनके ही संस्कारों की शिक्षा दी जा सके ।

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, माननीय सदस्य ने स्वयं स्वीकार किया है कि अगर इस पर चर्चा होनी है तो एच.आर.डी. मंत्रालय ही इस पर विचार करने के लिए सक्षम है । लेकिन मैं संस्कृति मंत्रालय की तरफ से इतना ही कहना चाहूंगी कि जो तमाम जानकारी मैंने पिछले 3-4 दिनों में, विशेष तौर पर इस प्रश्न को लेकर ग्रहण करने की कोशिश की है, उससे यह स्पष्ट है कि जो medium of instruction है उस पर इतना निर्भर नहीं करता कि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलते हैं । यह एक्सट्रा Curricular एक्टिविटीज और हमारे जो हफ्ते के खास सब्जेक्ट्स निर्धारित किए जाते हैं, जहां नृत्य, संगीत और दूसरे लेख पढ़ने की जो बात की जाती है, उससे सांस्कृतिक मजबूरियों को ग्रहण करना ज्यादा सम्भव है विद्यार्थी के लिए, बनिस्पत कि मीडियम आफॅ इंस्ट्रक्शन क्या हों । यह तो हर प्रदेश सरकारों पर भी निर्भर है कि वह अपने स्कूलों में कौन से माध्यम से पढ़ाती है और आज जो मैं महसूस करती हूं एक सासंद के नाते कि बहुत से हमारे बच्चे हैं जो अपने आपको उनके विचार भी और बच्चे भी अपने आपको वंचित महसूस करते हैं अगर उनको थोड़ा बहुत ज्ञान अंग्रेजी का न हो, तो वे सोचते हैं कि जो अंग्रेजी माध्यम में पढ़े हुए बच्चे है वे ज्यादा तरक्की करते हैं , गलत सोचते होंगे । लेकिन उनका यह विश्वास है कि अंग्रेजी पढने से अच्छी नौकरियां मिलती है, समाज में अच्छा स्थान मिलता है, यह एक मानसिक धारा बन गई है । मैं इस पर चर्चा नहीं करना चाहती हूं, मैं सक्षम नहीं हूं, लेकिन सांस्कृतिक मूल्यों की गिरावट अंग्रेजी माध्यम से नीचे नहीं होती है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : माननीय सभापति महोदय, अगर देखें तो मूलतः प्रश्न इस बात का नहीं है कि विषय वस्तु क्या है । प्रश्न इस बात का है कि किस भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी और उस भाषा के उस माध्यम के कारण संस्कृति पर हमारा क्या असर पड़ेगा । सवाल दो हैं । एक भाषा माध्यम, दूसरा विषय वस्तु। पाठ्यक्रम की विषय वस्तु कैसी होनी चाहिए यह एच.आर.डी. मिनिस्ट्री के अन्तर्गत है । मैं यह जानना चाह रहा हूं मंत्री जी से आपके माध्यम से और एक प्रश्न मेरा आपसे भी है, क्योंकि आम तौर पर लोग प्रश्न मंत्री जी से पूछते हैं, मुझ पर आपकी कृपा हो जाए। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि पाठ्यक्रम की विषय वस्तु यानी text and contents

of syllabus उसका असर होगा या कि भाषा और माध्यम का असर होगा । इस देश में अनेक प्रांतों में अनेक भाषाओं में शिक्षा दी जा रही है , तो उससे कोई संस्कृति पर असर पड़ गया हो, ऐसा कहां है? कृपा करके एक तो यह बात स्पष्ट कर दें और महोदय, आपसे मैं अनुरोध यह करना चाह रहा हूं, निवेदन है प्रश्न भी समझ लीजिए कि अगर अंग्रेजी का इतना ही बुरा असर इस देश पर पड़ रहा है, संस्कृति पर पड़ रहा है तो क्या श्रीमन, यहां पर इस हाउस के अंदर अंग्रेजी बंद करने पर विचार करेंगे?

श्रीमती अम्बिका सोनी : सर, मैंने तो पहले भी कहा है कि जो जानकारी हासिल हुई, कुछ खास सर्वे तो इस मुद्दें को लेकर नहीं हुए है, लेकिन जो भी जानकारी उपलब्ध है, उसके तहत मेरा यह कहना बिल्कुल उचित रहेगा कि कोई सांस्कृतिक मूल्यों को गिरावट हुई है, किसी एक विशेष भाषा में अपनी पढ़ाई करने से, यह जानकारी अभी तक नहीं मिली और जो एन.सी.ई.आर.टी. है, वह पूरे ध्यान से उन किताबों को रिकमंड और सजेस्ट करती है curriculum के लिए, जिनमें आपने संविधान में बनाए हुए मूल्यों की चर्चा हुई है ।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : महोदय, इस पर आपकी तरफ से कोई निर्देश नहीं मिल पाए ।मंत्री जी का तो उत्तर मिल गया, लेकिन आपका निर्देश नहीं मिला ।

श्री सभापति : मेरा निर्देश तो यही होगा कि यह पूरा सदन मिलकर एक प्रस्ताव पास करे । क्या आप करवा सकते हैं?

Amount deposited in National investment Fund

*282. SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether Government are parking the money in the National Investment Fund (NIF);

(b) if so, the details of such money parked in NIF during the last two years, year-wise;

(c) whether Government are taking up any developmental projects with the money;

(d) if so, the details of such activities undertaken during the last two years; and

(e) the present status of NIF?